हिन्दी कविता में उत्तर आधुनिक भावबोधः एक विश्लेषणात्मक अध्ययन

आज की हिन्दी कविता के सामने कई कठिन चुनौतियाँ रही हैं। समकालीन परिदृश्य में विचारों की असंख्य सरणियाँ उत्पन्न हुई हैं। सभ्यता की तीसरी लहर ने सामाजिक, आर्थिक और राजनीतिक क्षेत्र के तमाम विचारों को प्रभावित किया है। अतः हिन्दी काव्य-संवेदना बहुआयामी हो गई है। हिन्दी कविता आज उस संक्रमण-स्थिति पर खड़ी है जहाँ एक ओर उसमें अपनी जड़ों की तरफ लौटने की लालसा है तो दूसरी ओर उसपर उत्तर उपनिवेशवादी संस्कृति का दबाव भी है। आज के कवियों का एक वर्ग अपने काव्यानुभव के अतीत को खोये बिना सूचना की दुनिया में प्रवेश करने की कोशिश में है तो दूसरे वर्ग के कवि किसी भी पूर्वाग्रह के बिना कविता को खुली आँखों से देखने का प्रयास करते हैं। कथ्य और भाषिक संवेदना की दृष्टि से समकालीन हिन्दी कविता की दो प्रमुख सरणियाँ होती हैं- पहली धारा अज्ञेय एवं मुक्तिबोध की परंपरा की है तो दूसरी निराला और नागार्जुन की है। प्रथम धारा के कवियों को वैयक्तिक यथार्थ और सूचना क्रान्ति के द्वन्द्व का सामना करना पड़ा तो दूसरे वर्ग के कवियों को सामाजिक यथार्थ एवं अति-यथार्थवाद के बीच के संघर्ष को झेलना पड़ा है। अतः इन दो धाराओं के कवियों की जीवन के यथार्थ को देखने की दृष्टि ही नहीं, उन्हें अभिव्यक्त करने की शैली भी अलग-अलग हैं। यदि हिन्दी कविता को उत्तराधुनिक परिप्रेक्ष्य में आँकना है तो हिन्दी कविता की उक्त दो धाराओं पर उत्तराधुनिक संवेदना ने जो प्रभाव डाला है, उन पर समग्र विचार करना होगा।

पूर्ववर्ती अध्ययन

उत्तर आधुनिकता के प्रसिद्ध यूरोपीय चिंतकों में रोलाँ बार्थ, जॉक देरिदा, मिशेल फूको, लेवीस्ट्रास , बौद्रीआ, फ्रेडरिक जेमेसन (Fredric Jameson) आदि लेखकों ने इस साहित्यिक आन्दोलन को खूब विकसित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी है। यूरोपीय उत्तर आधुनिकतावादी साहित्य चिंतन से संबंधित कई ग्रन्थ प्रकाशित हुए हैं। इनमें ज्याँ फ्रांसुआ ल्योतार का 'द पोस्ट-मॉर्डन कंडीशन : ए रिपोर्ट ऑन नॉलज', फ्रेडरिक जेमेसन के 'पोस्ट-मॉडर्निज्म एंड कंज्यूमर सोसाइटी', 'पोस्ट-मॉडर्निज्म: द कल्चरल लॉजिक ऑफ लेट कैपीटलिज्म', क्रिस्टोफर नोरिस-का 'डिकंस्ट्रक्शन : थियरी एंड प्राक्टीस', जोनाथन कुलर के'ऑन डिकंस्ट्रक्शन', देरिदा-'ऑफ ग्रामेटोलजी', मैकहेल का 'पोस्टमॉडर्न फिक शन', स्टीवन कोनर का'पोस्टमॉडन कल्चर आदि प्रमुख हैं।

हिन्दी में सुधीश पचौरी के 'आलोचना से आगे', 'कविता का अंत', 'उत्तर आधुनिक साहित्य विमर्श', 'उत्तर आधुनिकता और उत्तर संरचनावाद', जगदीश्वर चतुर्वेदी का 'उत्तर आधुनिकतावाद', देवशंकर नवीन और सुशान्तकुमार मिश्र (सं) द्वारा संपादित 'उत्तर आधुनिकता कुछ विचार', देवेन्द्र इस्सर का 'उत्तर आधुनिकता साहित्य संस्कृति की नई सोच' पाण्डेय शशिभूषण 'शीतांशु' का 'डी-कंस्ट्रक्शन बनाम विसंरचना' आदि उत्तर आधुनिकता से संबंधित अध्ययनों में महत्वपूर्ण हैं।

उत्तराधुनिक परिप्रेक्ष्य में हिन्दी कविता पर कई आलोचनात्मक ग्रन्थ प्रकाशित हुए हैं जैसे 'कविता का अंत' (सुधीश पचौरी), 'कविता का अर्थात्', 'समकालीन हिन्दी कविता का यथार्थ' (परमानन्द श्रीवास्तव), 'शब्द और कर्म' (मैनेजर पाण्डेय),'कविता की संगत' 'सदी के अंत में कविता' (विजयकुमार), 'शताब्दी

की कविता' (नन्दकिशोर नवल), 'कवियों की पृथ्वी' 'आलोचना के सौ बरस' (अरविन्द त्रिपाठी), 'कविता की वापसी और अरुण कमल का काव्य'(विधि शर्मा) आदि। इनके अलावा उत्तर आधुनिकतावादी साहित्य, भाषा, कविता आदि पर कई शोधपरक आलेख भी प्रकाशित हो चुके हैं। इनमें 'उत्तर आधुनिक विमर्श में साहित्य का स्वरूप' (हरेराम पाठक) आजकल, जनवरी २००४, 'उत्तर आधुनिकता विशेषांक' (देवेन्द्र इस्सर) मानदण्ड पत्रिका, जनवरी १९९६, 'बाज़ार कविता और उपभोक्तावाद' (प्रियम अंकित) वागर्थ, सितंबर २००५, 'उत्तर आधुनिक सिद्धांत और समीक्षा' (देवेन्द्रनाथ ठाकुर) आजकल, मार्च २००४, 'उत्तर आधुनिकता बाज़ार संस्कृति की देन है' (अरुण अभिषेक पूर्णिया) आजकल, मई २००४ 'उत्तर-आधुनिकता भाव-बोध, पॉपूलर कल्चर' (सुधीश पचौरी) कथादेश, फरवरी २००४, 'विसंरचना:पाठ और अंतर्पाठीयता' तथा 'देरिदाई विसंरचना:विसंरचित मार्क्स', (पाण्डेय शशिभूषण 'शीतांशु')'अक्षरा', भोपाल से, 'उत्तर आधुनिक समाज में भारतीय कहानी' (शशिकला त्रिपाठी) आजकल, अक्तूबर २०००,'वृद्ध-पूँजीवाद का अघोर पंथ' (अजय तिवारी) वर्तमान साहित्य, अगस्त २००१ आदि महत्वपूर्ण हैं।

उद्देश्य और प्रविधि

यद्यपि सुधीश पचौरी, जगदीश चतुर्वेदी, देवेन्द्र इस्सर, पाण्डेय शशिभूषण 'शीतांशु, हरेराम पाठक, देवेन्द्रनाथ ठाकुर, प्रियम अंकित जैसे आलोचकों ने बाज़ारवाद, उपभोक्तावाद, पॉपुलर कल्चर जैसी उत्तराधुनिकता की किसी न किसी प्रवृत्ति के आधार पर हिन्दी कविता का विश्लेषण किया है। पर हिन्दी कविता को उत्तराधुनिक प्रवृत्तियों के परिप्रेक्ष्य में रखकर उसका समग्र अध्ययन नहीं हुआ है। हैं। 'हिन्दी कविता में उत्तर आधुनिक भावबोध एक विश्लेषणात्मक अध्ययन'

शीर्षक इस अध्ययन के दौरान आज की हिन्दी कविता की दो प्रमुख धाराओं - निराला की परंपरा और अज्ञेय की परंपरा - पर उत्तर आधुनिक भावबोध ने कैसा प्रभाव डाला है, उसका विश्लेषण किया जाएगा। साथ ही, उत्तर आधुनिक भावबोध के दायरे में समकालीन हिन्दी कविता को रखकर उसका समग्र और बहुआयामी विश्लेषण किया जाएगा। शोध के लिए प्रतिदर्श-चयन, सामान्वीकरण और विश्लेषणात्मक अध्ययन की प्रविधि अपनाई गई है। समकालीन हिन्दी कविता की दो प्रतिनिधि हस्ताक्षर निराला परंपरा के प्रतिनिधि कवि के रूप में अरुण कमल को और मुक्तिबोध परंपरा के प्रतिनिधि कवि के रूप में चन्द्रकांत देवताले को की प्रतिदर्श के तौर पर लिया गया है। इन दोनों की कविताओं का विश्लेषण उत्तर आधुनिक साहित्यिक संवेदनाओं के आधार पर किया जाएगा। अध्ययन के निष्कर्षों का सामान्वीकरण कर आज की हिन्दी कविता की उत्तर आधुनिक संवेदना को पहचानने का प्रयास किया जाएगा। साथ ही, अरूण कमल और चन्द्रकांत देवताले की काव्य-भाषा को केन्द्रक बनाकर समकालीन हिन्दी कविता की उत्तर आधुनिक भाषिक प्रवृत्तियों पर अध्ययन किया जाएगा। अतः इस शोध के निम्नलिखित चरण होंगे-

१. उत्तर आधुनिक भावबोध:अभिलक्षण और प्रवृत्तियाँ।

२. अरुण कमल की कविता में उत्तर आधुनिक भावबोध।

३. चन्द्रकांत देवताले की कविता में उत्तर आधुनिक भावबोध।

४. उत्तर आधुनिक भाषिक संवेदनाः हिन्दी कविता में।

निष्कर्ष।

१. उत्तर आधुनिक भावबोध:अभिलक्षण और प्रवृत्तियाँ

प्रथम अध्याय में उत्तर आधुनिकता संबंधी विभिन्न अवधारणाओं और

उसकी परिभाषाओं का विस्तृत अध्ययन कर उत्तर आधुनिक भावबोध के प्रमुख तत्वों और लक्षणों को निर्धारित किया जाएगा। साथ ही, आज की हिन्दी कविता उत्तर आधुनिक साहित्यिक प्रवृत्तियों से कहाँ तक प्रभावित हुई है, उसपर सरसरी दृष्टि डाली जाएगी।

२. अरुण कमल की कविता में उत्तर आधुनिक भावबोध

इस अध्याय के दौरान समकालीन हिन्दी कविता की सशक्त धारा -निराला परंपरा की कविताओं का विश्लेषण उत्तर आधुनिक साहित्यिक प्रवृत्तियों के संदर्भ में किया जाएगा। इस के लिए समकालीन हिन्दी कविता की निराला परंपरा के प्रतिनिधि कवि अरुण कमल की कविताओं का विस्तृत विश्लेषण प्रथम अध्याय ें के निष्कर्षों के आधार पर किया जाएगा। इसके लिए अरुण कमल की कविताओं का निम्न आयामों पर विश्लेषण और अध्ययन किया जाएगा। (क) उत्तर उपनिवेशवाद (ख) उत्तर संरचनावादी चेतना (ग) अति यथार्थवादी तकनीकें (घ) उपभोक्तावादी समाज (ङ) वृद्ध पूँजीवादी संस्कृति (च) पारिस्थितकीय सौंदर्य-चेतना।

३. चन्द्रकांत देवताले की कविता में उत्तर आधुनिक भावबोध

इस अध्याय के अन्तर्गत समकालीन हिन्दी की अज्ञेय परंपरा की कविताओं की समीक्षा उत्तर आधुनिक परिप्रेक्ष्य में की जाएगी। अज्ञेय परंपरा के प्रतिनिधि के रूप में चन्द्रकांत देवताले का चयन किया जाएगा। इस अध्ययन से जो निष्कर्ष निकाले जाएँगे उन्हीं के आधार पर हिन्दी की अज्ञेय परंपरा की कविताओं की उत्तर आधुनिक संवेदनाओं को पहचानने का प्रयास किया जाएगा। चन्द्रकांत देवताले के १९८५ के बाद प्रकाशित काव्य-संग्रहों को अध्ययन के केन्द्र में रखा है।

४. उत्तर आधुनिक भाषिक संवेदनाः हिन्दी कविता में

शोध के अंतिम चरण का लक्ष्य यह रहा है कि विखण्डन, विसंरचना, अंतर-पाठीयता जैसी उत्तर आधुनिक भाषिक चिंतन ने हिन्दी कविता की भाषिक संरचना पर कैसा प्रभाव डाला है । जॉक देरिदा, फ्रेडरिक जेमसन, पॉल दि मान, रोलाँ बार्थ, ज्यॉक लाकां, वर्जीनिया वुल्फ, लुईस इरीगिरी, जैसे भाषा वैज्ञानिकों के भाषिक-दर्शन और सिद्धान्तों को आधार बनाकर हिन्दी कविता की भाषिक संवेदना और संरचना पर विचार किया जाएगा।

निष्कर्ष

अध्याय एक : उत्तर आधुनिक भावबोध:अभिलक्षण और प्रवृत्तियाँ

उत्तर आधुनिकता, आधुनिकता के विरुद्ध उभरी हुई एक नकारात्मक विचारधारा है। क्योंकि इसमें आधुनिकता की अनेक प्रवृत्तियों की उपेक्षा की गई है। यह कला, भाषा, साहित्य, दर्शन और वास्तुविद्या जैसे क्षेत्रों में विकसित 'एक आन्दोलन', 'एक ज्ञानावस्था' या 'सांस्कृतिक उद्योग' है। 'अंतवादी दर्शन', 'विखंड़नवाद की परिकल्पना', 'संरचना का टूटन', 'लेखक की मृत्यु की घोषणा', 'रचना की अंतर्पाठीयता' , 'भोंडी या अश्लील साहित्य का प्रचलन', 'पेस्टीच' (pastiche) और 'पेरोड़ी' (parrady) साहित्य आदि उत्तर आधुनिकता के प्रमुख लक्षण है। वृद्ध-पूँजीवाद, नव-औपनिवेशवाद, भूमण्डलीकरण, उपभोक्तावाद, बाज़ारवाद, अति-यथार्थवादी तकनीकों का प्रयोग, नई पारिस्थितकीय सौंदर्य बोध, नारी मुक्ति, दलित चेतना, आदि उत्तर आधुनिक साहित्य की प्रमुख प्रवृत्तियाँ हैं।

समकालीन हिन्दी कविता को उत्तर आधुनिक परिप्रक्ष्य में विश्लेषण करने पर यह निष्कर्ष निकला है कि इसके अन्तर्गत कथ्य और भाषिक संवेदना की दृष्टि से दो सरणियाँ हैं। प्रथम धारा है अज्ञेय परंपरा के कवियों की। इस धारा के प्रमुख

कवियों में मुक्तिबोध, धूमिल, चन्द्रकान्त देवताले, मंगलेश डबराल, राजेश जोशी, कुँवर नारायण, इब्बार रब्बी आदि का नाम विशेष उल्लेखनीय है। इनकी काव्य-चेतना वैयक्तिक यथार्थ और सूचना क्रान्ति के द्वन्द्ध का सामना करती दिखाई पड़ती है। इन कवियों का समान्य स्वभाव यह है कि वे अपने काव्यानुभव के अतीत को खोये बिना सूचना की दुनिया में प्रवेश करने की कोशिश में हैं। दूसरी धारा है सूर्यकांत त्रिपाठी निराला की। इस धारा के प्रमुख कवि हैं -नागार्जुन, अरुण कमल, और केदारनाथ सिंह, अशोक वाजपेई आलोक धन्वा, उदयप्रकाश। इनका रचना-धर्म सामाजिक यथार्थ एवं अति-यथार्थवाद के संघर्ष को झेलते हुए दिखाई पड़ता है। वे कविता को खुली आँखों से देखने का प्रयास करते हैं और उनकी कविता समाजोन्मुख भी है।

समकालीन हिन्दी कविता उत्तर आधुनिकतावाद की मूलभूत प्रवृत्तियों से पूरी तरह प्रभावित हुई है। कविता में मीडिया, टेक्नोलॉजी, बाज़ारी-संस्कृति आदि का स्पष्ट प्रभाव दृष्टव्य है। सपने के नष्ट होने के अहसास, 'प्लैजर प्रिंसिपल' या सुख-सिद्धान्त , कविता को 'धरती माँ' का महा प्रतीक के रूप में देखना आदि प्रवृत्तियाँ हिन्दी कविता में बाज़ार और विश्व बाज़ार के बढ़ते आतंक के कुछ उदाहरण हैं। उत्तर आधुनिक हिन्दी कविता के अन्य प्रमुख मुद्दे हैं- कविता का बृहत्तर समुदाय से काटते जाना, कविता की बनावट में बदलाव आना, काव्य को पढ़ने-लिखने-शब्दार्थ को प्राप्त करने की तरीके में अंतर आना, श्रोता और पाठक की कमी, आदि। हिन्दी के उत्तर आधुनिक भावबोध से लिखनेवाले अरुण कमल, चन्द्रकांत देवताले, मंगलेश डबराल, केदारनाथ सिंह, इब्बार रब्बी, ऋतुराज, लीलाधर जगूठी, आलोक धन्वा जैसे कवियों की रचनाओं में ये प्रवृत्तियाँ और लक्षण अधिक दृष्टव्य हैं।

अध्याय दो : अरुण कमल की कविता में उत्तर आधुनिक भावबोध

हिन्दी की निराला परंपरा की कविताओं को उत्तर आधुनिक परिप्रेक्ष्य में समझने के लिए प्रतिदर्श के तौर पर अरुण कमल की कविताएँ चुनी गई है। अरुण कमल समकालीन हिन्दी कविता के ऐसे प्रतिनिधि हस्ताक्षर हैं जो सीधे उत्तर आधुनिक परिवेश से संबद्द हैं। अरुण कमल अपनी 'काव्य संवेदना की पुतली' से सारे संसार को देखते हैं। अतः उनकी कविता का मुख्य स्वर सामाजिक यथार्थ का है।

अरुण कमल की काव्य-उपस्थिति हमेशा समकालीन काव्य के परदृश्य में महत्वपूर्ण रही है। उनकी कविताओं में भारतीय लोकजीवन के यथार्थ की गहरी आंच अनुभव की जा सकती है। साथ-साथ प्रकृति, मनुष्य और समाज को यथार्थ के धरातल पर खड़ा करके इन सबके बीच के अन्तर्संबंधों एवं अन्तर्विरोधों की गहरी पड़ताल भी दर्शनीय है। उनकी कविता में मनुष्य के आपसी रिश्तों की खोज तथा आधारभूत मानवीय भावनाओं, मूल्यों को बचाए रखने की बेचैनी ज़्यादा दिखाई देती है। अरुण कमल के लिए उत्तर आधुनिकता का अर्थ है पूँजी, बाज़ार, स्वार्थ, और अमानवीकरण के विरुद्ध जाग्रत होना। उनकी दृष्टि में अपने समय की जटिलताओं एवं चुनौतियों को पहचानना और रचनात्मक स्तर पर मनुष्य- विरोधी स्थितियों का प्रतिरोध करना ही उत्तर आधुनिक संवेदना है।

अरुण कमल की कविता में उत्तर आधुनिक युगीन वैश्विक संस्कृति की खतरों का संकेत है। कवि की नज़रिया समाजोन्मुखी और मूल से कट जाने के विरुद्ध भी है। इसमें एक ओर मनुष्य जीवन के (वर्तमान और अतीत) चिह्नों की नष्ट होने का अहसास है तो दूसरी ओर भूमण्डलीकरण के प्रभाव से पल-पल बनती-बिगड़ती-बदलती दुनिया का वर्णन है। नई वैश्विक संस्कृति से क्षीण होती

परंपरा की स्पष्ट अभिव्यक्ति ‘मनुष गन्ध’, ‘दरजिन’, ‘कथावाचक’, ’एक मंदिर की गाथा’,‘शिविर’, ‘जीवधारा’,‘नये इलाके में’, ‘बुद्ध मंदिर में’ ‘तमसो मा ज्योतिर्गमयः’ आदि कविताओं में हुई है।

मीडिया की अति-यथार्थवादी तकनीकों पर अरुण कमल की कविता बोलती है। कवि संचार-माध्यमों को सांकृतिक उद्योग के केन्द्र के रूप में देखते हैं। ‘खबर’, ‘संयोग’, ‘सबूत’, ‘जागरण’, ‘सूर्य-ग्रहण’, ‘जाल’ आदि अति यथार्थवादी तकनीकों की ओर संकेत करनेवाली कविताएँ हैं। अरुण कमल देखते हैं कि किस तरह वृद्ध पूँजीवादी सभ्यता तीसरी दुनिया के देशों के नौजवानों और मज़दूरों को निष्क्रिय और दिशाहीन बनाती है। ‘रावण के माथे’, ‘सूचकांक’, ‘लौ’, ‘महात्मा गाँधी सेतु और मज़दूर’ ‘और बेचारी कुबड़ी बुढ़िया’ आदि कविताएँ इस मुद्दे पर प्रभाव डालती हैं।

अरुण कमल उपभोक्तावादी संस्कृति को वर्तमान समय के आर्थिक संघर्ष के बुनियाद के रूप में देखते हैं। उदारीकरण, विश्व-बाज़ार, सांस्कृतिक साम्राज्यवाद, विश्व-ग्राम, उपभोक्तावादी समाज आदि परिकल्पनाओं की स्पष्ट सूचनाएँ ‘हाट’, ‘श्रद्धाँजली’, ‘एकालाप’, ‘ऐसा क्यों हो रहा है’, ‘तुम चुप क्यों हो’, ‘बात’ आदि कविओं में है। पारिस्थितकीय सौंदर्य-बोध के अन्तर्गत कवि ने प्रकृति और मनुष्य के बीच बनी रही जो संयमित ध्वनि थी, वह फूटने की ओर संकेत किया है। उदाहरण है-‘गंगा को प्यार’, ‘स्नान पर्व’, ‘झड़ना’,‘सौन्दर्य’ ‘ऐसे में’, ‘जैसे’, ‘अगहन’ आदि कविताएँ।

अध्याय तीनः चन्द्रकांत देवताले की कविता में उत्तर आधुनिक भावबोध

चन्द्रकांत देवताले की काव्य-संवेदना आधुनिक हिन्दी कविता के प्रायः सभी चरणों और मोड़ों से गुज़रकर उत्तर आधुनिक दौर पर पहुँच गई है। अज्ञेय परंपरा

के प्रतिनिधि कवि है चन्द्रकांत देवताले। उनकी कविता हिन्दी की उस समकालीन कविता का प्रतिनिधित्व करती है जहाँ वैयक्तिक यथार्थ को उत्तर आधुनिक अति यथार्थ की चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

चन्द्रकांत देवताले की कविता में एक ओर भूमण्डलीकरण की वजह से 'अपनी प्रचीन स्मृतियों का खज़ाना' नष्ट होने का अहसास है तो दूसरी ओर आदिवासी जीवन की लोक-कला, संस्कृति, भाषा आदि पर नुकसान पहुँचानेवाली अपसंस्कृति से बचने की कोशिश है। उत्तर औपनिवेशिक सभ्यता की स्पष्ट सूचनाएँ देनेवाली कविताएँ हैं- 'गाँव तो थूक नहीं सकता मेरी हथेली पर', 'नागझिरी', 'इतिहास हादसा', और 'पुनर्जन्म', 'सदियों बाद मुलाकात', 'बालम ककड़ी बेचनेवाली लड़कियाँ', 'हाइ पॉवर नंगे बस्तर को कपड़ा पहनाएगा'

चन्द्रकांत देवताले 'असंख्य आँखों के सामने चमकती' मीड़िया से निर्मित वास्तविकता के चेहरे को नहीं, उसकी पीठ के पीछे की खतरनाक साजिशों एवं अंधेरे से समझदार हैं। अंधेरे से 'चमकदार और सुन्दर होकर चीज़ों में प्रवेश कर' सूचना और खबर को जन्म देती है, उस पर चन्द्रकांत देवताले की कविता बोलती है। कवि की राय में आज संचार माध्यमों ने एक ऐसा भूमण्डलीय वातावरण का निर्माण किया है जिससे समूचे समाज बुरी तरह प्रभावित है। इस सूचना-तंत्र में समाचार, मनोरंजन, और विज्ञापन ही महत्वपूर्ण है। उदाहरण है-'सिर्फ तारीखें नहीं बदला करतीं समय', 'पन्द्रह अगस्त', 'यह विषय कठिन नहीं है' 'इस मामले में यही बताया गया', 'बताया गया है' 'यहाँ अश्वमेध यज्ञ हो रहा है', 'पवित्र स्नान के दिन धर्मनिष्ठ मरण' 'हिंसक समय में', आदि कविता।

'खरीददार की परछाई तक' नज़र रखनेवाली बाज़ारी व्यवस्था के रूप में उपभोक्तावादी संस्कृति की अभिव्यक्ति 'लेब्रेडोर', 'सबसे ज़रूरी काम', 'करिश्मे

भी दिखा सकती हैं अब किताबें, 'नींबू माँगकर' आदि कविताओं में प्रकट हुई हैं। वृद्ध पूँजीवादी संस्कृति के अन्तर्गत कवि ने 'विश्व-बाज़ार की भूखी और प्यासी वासनाओं' को निम्न कविताओं के ज़रिए अभिव्यक्त किया है- 'यहाँ अश्वमेध यज्ञ हो रहा है' 'हम से भी तो कुछ सीखना चाहिए मनुष्यों को' 'बताया गया है' 'करिश्मे भी दिखा सकती है अब किताबें' 'नागझिरी' आदि।

पारिस्थितकीय सौंदर्य चेतना के अन्तर्गत कवि धरती को पुरुष वर्चस्व की शिकार बनी नारी (पारिस्थितकीय स्त्रीवाद-Eco-Feminism) के प्रतिरूप के रूप में देखते हैं। 'भावी दुर्दिनों की परछाइयाँ', 'आकाश के फेफड़ों में दमा' 'नदियों के पेट में कैंसर' 'नदियों का अमर्यादित सौन्दय' जैसी पारिस्थितकीय सौंदर्य-चेतना से युक्त प्रयोग निम्न कविताओं में दृष्टव्य है- 'पुल बनेगा तो', 'मज़ा ले रहे होंगे लोग', 'पेड़', 'बाई! दर्द ले', 'सवाल-जवाब' 'तीसरा विश्वयुद्ध' आदि।

अध्याय चार-उत्तर आधुनिक भाषिक संवेदना: हिन्दी कविता में

इस अध्याय में अरुण कमल और चन्द्रकांत देवताले की कविताओं में प्रयुक्त भाषिक प्रयोगों के आधार पर समकालीन हिन्दी कविता की भाषिक संरचना पर विचार किया गया है। जॉक देरिदा ने 'स्पीच एंड फिनोमिना', 'राइटिंग एंड डिफरेंस' तथा 'ऑफ ग्रामाटोलॉजी' जैसे अध्ययन के द्वारा अर्थ के पुराने सोच को खण्डित किया और कहा कि सभी पाठ या लेखन में (text) एक प्रकार की द्वयार्थकता (duel meaning) है। इसलिए किसी भी रचना की पूर्ण, निश्चित, मूलभूत और आखिरी व्याख्या बिलकुल असंभव है। अर्थात् किसी भी रचना की कोई निश्चित अर्थ या व्याख्या नहीं है। साहित्य-पाठ के विखंडन से अर्थ की अनंत संभावनाएँ पैदा होती हैं। देरिदा के मतानुसार संरचना के अंदर जो अर्थ है वह बहु-आयामी और चारों ओर बिखरनेवाला (diffussive) है। रोलाँ बार्थ द्वारा

प्रस्तुत 'लेखक का अंत' जैसी अवधारणा के अनुसार ग्रन्थकार की खजाने में भाषा के अलावा कुछ भी नहीं है। यहाँ रचनाकार नहीं, अपितु भाषा बोलती है। लाकां की भाषा सैद्धांतिकी संरचनावाद और अति-यथार्थवाद पर आधारित है। वर्जीनिया वुल्फ की भाषा-सैद्धांतिकी में 'औपचारिकाता एवं पुरुषत्व का घालमेल नज़र आता है। पॉल दि मान ने भाषिक चिह्नों से संबंधित सिद्धांत प्रस्तुत किए हैं। वृद्ध पूँजीवाद के सांस्कृति तर्क प्रस्तुत करनेवाले फ्रेडरिक जेमसन का 'पैरोडी' और 'पेश्टीच' सिद्धान्त भाषिक संरचना की नई प्रविधियाँ हैं।

इन भाषा वैज्ञानिकों द्वारा प्रस्तुत सिद्धांतों को आधार बनाकर हिन्दी काव्य साहित्य की भाषिक संरचना को समझने की कोशिश है। इसके लिए नमूने के रूप में अरुण कमल और चन्द्रकांत देवताले की कविताओं में अभिव्यक्त भाषा को चुना है। अरुण कमल ऐसी भाषा और शैली का प्रयोग हुआ है जो सूचना तंत्र में प्रयोग करती है। खबर शीर्षक कविता में ऐसा प्रयोग है-'अखबारों में खबर थी विश्वसुन्दरी का वजन ३९ किलो है'। 'सूर्य-ग्रहण शीर्षक कविता में-'अखबारों ने मुखपृष्ठ पर मोटे अक्षरों में छापाः आँखें न खोइए, सूर्य-ग्रहण न देखिए' । कुछ अन्य उदाहरण हैं 'संयोग', 'वक्त', 'जागरण', 'सूर्य ग्रहाण', 'जाल' आदि कविताएँ। चन्द्रकांत देवताले सूचना-तंत्र से अनुकूलित भाषा का प्रयोग किया है। 'चमकदार और सुन्दर होकर भी चीज़ों में प्रवेश कर चुका है अँधेरा' जैसा प्रयोग 'पन्द्रह अगस्त' शीर्षक कविता में 'असंख्य आँखों से दिखाई दे रही, चमकती चीज़ों की पीठ के पीछे जैसा प्रयोग 'सिर्फ तारीखें नहीं बदला करतीं समय शीर्षक कविता में कुछ अन्य उदाहरण हैं 'यह विषय कठिन नहीं है', 'चकमक पत्थर', 'यहाँ अश्वमेध यज्ञ हो रहा है','पवित्र स्नान के दिन धर्मनिष्ठ मरण', 'बताया गया है', 'हिंसक समय में, 'नींबू माँगकर', आदि कविताएँ।

अरुण कमल की भाषिक संवेदना में पूरे विश्व को खुली आँखों से देखने की नज़रिया समाहित है। पूरे संसार को शामिल करने की पहल है। विशेष रूप से 'पुतली में संसार' शीर्षक काव्य-संग्रह की कविताओं में। 'धरती और आकाश तक फैला संबंध', 'पुतली नहीं पूरी आँख दिख रही है' जैसा प्रयोग। उत्तर आधुनिक भाषिक संवेदना के ये तत्व अरुण कमल की 'इंतज़ार', 'पुतली में संसार', 'थोड़े से बच्चे और बाकी बच्चे', 'लोककथा', 'दस बजे', 'दोस्त', 'बच्चों की डॉक्टर की मौत',आदि कविता में भी दृष्टव्य है। चन्द्रकांत देवताले की कविताओं प्रयुक्त भाषिक संवेदना की एक विशेषता है रंग-ध्वनि और संगीत का सामंजस्य जैसे- 'ब्रह्माण्ड का ऑर्केस्ट्रा टूटना', ब्रह्मांड के पतझर के कांसे की घंडियों की तरह, बच रहे हैं कवि के शब्द' आदि प्रयोग। 'नींद और कवि', 'भाषा के इस भद्दे नाटक में ', 'फिलवक्त', 'कविता के अंधेरे में', 'औरत', 'देवी वध', 'चीते को जुकाम हाने से' आदि कविताओं में भी इस तरह के प्रयोग देख सकते हैं।

उत्तर आधुनिकतावाद, आधुनिकता के विरुद्ध उभरी हुई एक नकारात्मक विचारधारा है। इसमें आधुनिकता की अनेक प्रवृत्तियों की उपेक्षा की गई है। 'ग्लोबल कल्चर', विश्व-ग्राम, संचार-माध्यमों की कूटनीति, वृद्ध पूँजीवादी सभ्यता, नारी मुक्ति, पारिस्थितकीय सौन्दर्य बोध आदि इस अवधारणा के अभिन्न अंग और लक्षण भी है। वर्तमान हिन्दी कविता बाज़ार, अर्थ, टैकनॉलाजी, नई संस्कृति और मूल्य के आतंक से बुरी तरह संक्रमित है। इसमें भविष्य की 'विस्फोटक परछाइयों' का संकेत है, 'ब्रह्माण्ड का ऑर्केस्ट्रा' टूटने की ध्वनि है और अपनी जड़ों की तरफ लौटने की लालसा है। 'अंधेरे' से किस तरह 'चमकदार और सुन्दर' खबर जन्म लेती हैं, उस पर भी समसालीन कविता बोलती है। आज के

कवियों के मतानुसार कविता के पुनर्वाचन और पुनर्पाठ से बहु-आयामी और चारों ओर बिखरनेवाला कवितार्थ की प्राप्ति होती है। कविता की बनावट, भाषिक प्रयोग-चिह्न, कथ्य और शिल्प संबंधी प्रतिमान, काव्य सौन्दर्य की कसौटियाँ आदि में चंचलता है।